महर्षि लोमश की शिवाराधना

प्राचीन काल में एक बड़ा दरिद्र शूद्र था। भूख और प्यास के मारे वह इधर-उधर मारा-मारा फिरता था। कहीं भी उसे पेट भर अन्न नहीं मिलता था। एक समय वह घूमता हुआ एक तीर्थ (जलाशय) के संनिकट पहुँचा। उसी के समीप एक शिवमंदिर था। प्यास के मारे उसके प्राण सूखे जा रहे थे। इसलिये वह झटपट उस जलाशय में प्रविष्ट हो गया और जल पीकर स्नान करने लगा। वहाँ स्नान से पवित्र हो, उसी में से कमल के मनोहर पुष्प लेकर तथा कमलपत्र में शीतल सुगन्धित जल भरकर के उसने मन्दिर में प्रवेश किया और महादेवजी को स्नान कराकर बड़ी भक्ति से कमल के पुष्प चढ़ाये। संसार में अनेक योनियों में करोड़ों बार जन्म ले-लेकर पापरहित होने पर प्राणी शंकर की भक्ति कर सकता है। यदि उसका प्रारब्ध अच्छा होता है तो उसको सब साधन मिल जाते हैं और पूर्णभाव से जगत् के कारणभूत शंकर में उसकी अनन्य भक्ति हो जाती है। प्रारब्धवश उस दरिद्र की भी शिवभक्ति जाग्रत हो उठी थी और पूजा-सम्भार की सामग्री भी उसे अनायस प्राप्त हो गयी थी। उसी अदृष्ट प्रेरणावश फिर उसने भगवान् श्रीकण्ठ को साष्टाङ्ग प्रणाम किया और शुद्ध हृदय से उनकी स्तुति करके उस दुःख से मुक्ति पाने की प्रार्थना की। भूख से उसका गला सूखा जा रहा था। भगवान् नीलकण्ठ को नमस्कार करके वह आगे चल पड़ा। मार्ग में ही उसकी मृत्यु हो गयी।

उसी एक बार की पूजा के प्रभाव से उस शूद्र शरीर का परित्याग करने के अनन्तर उसने परम कुलीन ब्राह्मण के घर में जन्म प्राप्त किया। पूर्वजन्म के शिर्वाचन के पुण्य से उसको पिछले जन्म की सब बातों का यथावत् ज्ञान था। अतएव इस संसार को सर्वथा मिथ्या समझकर उसने प्रारम्भ से ही मौनव्रत धारण कर लिया। उसके पिता ने भगवान् शंकर की बड़ी कठिन आराधना करके वृद्धावस्था में वही एक पुत्र पाया था। अतः उसका नाम ईशान रखा गया, परंतु जब उस वृद्ध ब्राह्मण ने अपने पुत्र को गूँगा समझा तो उन्हें दारुण दुःख हुआ। उसके गूँगेपन को दूर करने का निश्चय कर उन्होंने अच्छे-अच्छे वैद्यों की अनेक ओषधियों का सेवन कराया, अनेक प्रकार के मन्त्र-यन्त्रों का आश्रय लिया, पर किसी से कुछ लाभ नहीं हुआ। अपने माता-पिता को इस प्रकार उपाय करते देख कर ईशान को मन ही मन बड़ी हँसी आती थी और दुःख भी होता था, पर उसका वैराज्ञ दृढ़ था, अतः वह अपने निश्चय से तनिक भी विचलित नहीं हुआ।

ईशान युवावस्था में रात के समय घर से निकलकर चुपचाप कमल के फूलों से शिवजी की पूजा कर आते और घर में आकर सो जाया करते थे। वे अन्न न खाकर केवल फलाहार करते और मनसा-वाचा-कर्मणा भगवान् सदाशिव की आराधना किया करते।

इस प्रकार आराधना करते-करते सौ वर्ष व्यतीत हो गये। तब भगवान् ने प्रसन्न होकर उन्हें दर्शन दिया। उनके दर्शन पाकर वे मुक्तकण्ठ से उनकी स्तुति करते हुए कहने लगे कि 'हे सदाशिव! हे करुणावरुणालय! आप भक्तों की कामना पूर्ण करने में बहुत प्रसन्न होते हैं। थोड़ी-सी

भी आराधना करने से आप उसे अनन्त फल देते हैं। हे भगवन्! आप यदि मेरे ऊपर प्रसन्न हैं तो मुझे जरा और मरण से रहित कर दीजिये। आपके कृपाकटाक्षमात्र से मेरी कामना पूरी हो सकती है।'

यह सुनकर भगवान् शम्भु ने अपनी प्रेममयी वाणी में कहा–'वत्स! नाम और रूप धारण करनेवाले व्यक्ति को जरा और मरण से छुटकारा नहीं मिल सकता। जिसने जन्म लिया है, उसको निश्चय मरना होगा। इसलिये जितना चाहो, उतना दीर्घ जीवन मैं तुमको दे दूँ, पर अनन्त जीवन प्राप्त करना दुर्लभ है।'

भगवान् के ऐसे वचन सुनकर ईशान ने विनयपूर्वक प्रार्थना की कि 'हे प्रभो! यदि आप मुझे अजर–अमर नहीं भी करें तो कृपाकर यह वर दीजिये कि एक कल्प व्यतीत होने पर मेरे शरीर का एक रोम गिरा करे और जब सब रोम गिर जायँ तब मेरा शरीर छूटे। शरीरपात के पश्चात् मैं आपका गण बनूँ।' भगवान् सदाशिव ने हर्षपूर्वक उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और वे कैलास को चले गये। उसी दिन से ईशान का नाम लोमश पड़ गया और वे अपना सारा समय भगवान् शंकर की आराधना में बिताने लगे।

भगवान् शंकर की उपासना कर लोमश महर्षि ने इतना दीर्घ जीवन प्राप्त किया जितना कि संसार में किसी को भी नहीं मिला था। उनकी आराधना करने से त्रिलोकी में ऐसी कोई वस्तु नहीं जो न प्राप्त हो सके। शंकर की सेवा से तथा प्रणवमन्त्र के जप से बिना प्रयास के मुक्ति मिल जाती है। सब पापों के क्षय हो जाने से शिवजी के चरणों में मन लगता है। जिनका हृदय पापों से भरा है, उन्हें शिव–भजन अच्छा नहीं लगता । प्रथम तो इस भारतवर्ष की पावन भूमि में मनुष्य–जन्म पाना ही दुर्लभ है, मनुष्य–जन्म पाने पर कर्म का अधिकारी होना उससे भी दुर्लभ है। कर्म के अधिकारी द्विजजाति में जन्म भी प्राप्त हुआ तो भगवान् महादेवजी में अविचल भक्ति होना नितान्त दुर्लभ है। पूर्वजन्म के जब बड़े पुण्य होते हैं तभी इन शुभ कर्मों की ओर मन की प्रवृत्ति होती है, अन्यथा नहीं। परन्तु शिवभक्तों के लिये न तो संसार में कोई वस्तु दुर्लभ है और न कोई कार्य ही असाध्य है –

न दुर्लभं न दुष्प्रापं न चासाध्यं महात्मनाम्।
शिवभक्तिकृतां पुंसां त्रिलोक्यामिति निश्चितम्।।

(स्कन्दपु. माहेश्वरख. कुमा. 10/59)

(उपर्युक्त कथा गीताप्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित कल्याण के संक्षिप्त स्कन्दपुराणांक के माहेश्वरखण्ड–कुमारिकाखण्ड, अध्याय 10 तथा शिवोपासनांक पर आधारित है।)

❀❀❀❀❀❀